


---

# Marutistotra or Bhimarupi Stotra

——  
भारुतीस्तोत्र अथवा भीमरुपी स्तोत्र

——  
Document Information



---

Text title : Marutistotram 1 or Bhimarupi stotra marATHI

File name : mArutIstotramMarathi.itx

Category : hanumaana, pATHAntara

Location : doc\_hanumaana

Transliterated by : Neelkanth Kulkarni

Proofread by : Neelkanth Kulkarni

Latest update : May 19, 2026

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

May 19, 2026

*sanskritdocuments.org*

---



---

## Marutistotra or Bhimarupi Stotra

---

### मारुतीस्तोत्र अथवा भीमरुपी स्तोत्र

---



भीमरुपी मडारुद्रा वज्र उनुमान मारुती ।  
वनादि अंजनीसूता रामदूता प्रभंजना ॥ १ ॥

मडाबणी प्राणदाता सकणां उठवी बणें ।  
सौभ्यकारी दृग्भडारी धूर्त वैष्णव गायका ॥ २ ॥

दीनानाथा डरीरुपा सुंदरा जगदांतरा ।  
पातालदेवताडंता भव्यसिंदूरलेपना ॥ ३ ॥

लोकनाथा जगन्नाथा प्राणनाथा पुरातना ।  
पुण्यवंता पुण्यशीला पावना परितोषका ॥ ४ ॥

ध्वजगें उयली बाडो आवेशें लोटला पुढें ।  
काणान्नि काणरुद्रान्नि देभतां कांपती भयें ॥ ५ ॥

ब्रह्मांडें माडलीं नेणों आवणे दंतपंगती ।  
नेत्रान्नि यालिव्या जवाणा ब्रडुटी तडिह्या बणें ॥ ६ ॥

पुच्छ तें मुरडिलें माथां डिरीटी कुंडलें बरीं ।  
सुवर्णकडिकांसोटी घंटा डिडिणि नागरा ॥ ७ ॥

ठकारे पर्वताअैसा नेटका सडपातणू ।  
थपणांग पाडतां मोहें मडाविद्युल्लतेपरी ॥ ८ ॥

कोटिव्या कोटि उडुणें जेपावे उत्तरेकडे ।  
मंदाद्रीसारिभा द्रोणू डोर्धे उत्याटिला बणें ॥ ९ ॥

आणिला मागुती नेला आला गेला मनोगती ।  
मनासी टाडिलें मागें गतीसी तूणणा नसे ॥ १० ॥

अणूपासोनि ब्रह्मांडायेवढा डोत जातसे ।  
तयासी तुणणा डोहें मेरुमांदार धाडुटें ॥ ११ ॥

ब्रह्मांडाभोवते वेढे वज्रपुच्छे कुरु शके ।  
तथासी तुण्णा कैंथी ब्रह्मांडी पाळतां नसे ॥ १२ ॥

आरक्त देभिलें डोणां आसिलें सूर्यमंडला ।  
वाढतां वाढतां वाढे भेदिलें शून्यमंडला ॥ १३ ॥

धनधान्य पशुवृद्धि पुत्रपौत्र समग्रही ।  
पावती रुपविधादि स्तोत्रपाठे कुरुनियां ॥ १४ ॥

भूतप्रेतसमंघादि रोगव्याधि समस्तही ।  
नासती तूटती चिंता आनंदे भीमदशर्नि ॥ १५ ॥



डे धरा पंधराश्लोकी लाभवी शोभवी भवी ।  
दृढदेहो निःसंदेशो संप्रिया चंद्रकलागुणै ॥ १६ ॥

रामदासी अग्रगण्य कपिकुणासि मंडालू ।  
रामरुपी अन्तरात्मा दशनि दोष नासती ॥ १७ ॥

॥ इति श्री रामदासकृतं संकटनिरसनं नाम  
श्री मारुतिस्तोत्रम् संपूर्णम् ॥

Encoded by Neelakanth Kulkarni neel at authenticityyoga.org

---

——  
*Marutistotra or Bhimarupi Stotra*  
pdf was typeset on May 19, 2026  
——

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

